शब्द-शक्ति

शब्दक शक्तिक अर्थ होइछ अर्थबोध । शब्दक महत्त्व अर्थक लेल अछि । जाहि शब्दक कोनो अर्थ नहि होइछ, से निरर्थक शब्द मानल जाइत अछि आ साहित्यकेँ एहन शब्दसँ कोनो प्रयोजन नहि रहैत छैक । तेँ योग्यता, आकांक्षा ओ आसत्तिसँ युक्त पद समूहकेँ वाक्य कहल गेल अछि । योग्यता, आकांक्षा आ आसत्तिक चर्चा वाक्य विचारमे कयल गेल अछि, तकर पृष्ठपोषण एतय उचित नहि ।

शब्द काव्यक शरीर थिक । मानव अपन भावकेँ शब्दक माध्यमसँ व्यक्त करैत अछि। शब्दे सुनल जाइछ आ ताहि आधार पर शब्द दुइ प्रकारक अछि– ध्वन्यात्मक एवं वर्णात्मक । वीणा, मृदंग आदि वाद्य यन्त्र, पशु-पक्षीक बोली आ आघातक द्वारा उत्पन्न शब्दकेँ ध्वन्यात्मक शब्द कहल जाइत अछि । दोसर बाजल वा लिखल जाय वला शब्द केँ वर्णात्मक कहल जाइत अछि ।

एहि वर्णात्मक शब्दमे मात्र सार्थक शब्दक प्रयोजन साहित्यकेँ होइछ । अर्थरहित शब्द जहिना निष्प्रयोजनीय होइछ, तहिना बिना शब्दक निर्माण भेने अर्थक कल्पना नहि कयल जा सकैछ । तेँ शब्द आ अर्थमे अन्योन्याश्रित संबंध अछि । शब्दक अर्थे ओकर शक्ति अछि आ ई शक्ति तीन प्रकारक होइछ– **अभिधा, लक्षणा** आ **व्यञ्जना** । जाहि शब्दमे ई शक्ति रहैछ ओ क्रमशः वाचक, लक्षक ओ व्यञ्जक कहबैछ । एकर अर्थ सेहो तीन प्रकारक होइछ–वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ आ व्यंग्यार्थ ।

जे साक्षात् सांकेतिक अर्थक बोधक होइछ, ओ वाचक शब्द थिक । एकरा मुख्यार्थ कहल जाइत अछि । अर्थात् जाहि शब्दकेँ सुनितहि अर्थ स्पष्ट भऽ जाय, से वाचक शब्द कहबैछ । आचार्य मम्मटक अनुसार '**साक्षात् संकेतितः योऽर्थमभिधत्ते स वाचकः** ।'

संकेत ज्ञान आठ प्रकारसँ होइत अछि ।

। व्याकरणसँ- व्याकरण द्वारा शब्दक प्रकृति-प्रत्ययक ज्ञान होइत अछि । यथा- लौकिक, वैयाकरण, लठैत आदि ।

ई शब्द सुनितहि पाठक वा श्रोताकेँ 'लोकमे उत्पन्न' व्याकरण जननिहार' आ 'लाठी चलनिहार' आदि अर्थ-बोध प्राप्त भऽ जाइछ । एहि लेल व्याकरणक ज्ञान आवश्यक अछि ।

2 उपमानसँ- उपमानक अर्थ सादृश्य अथवा समानता होइत अछि । कोनो अनचिन्हार वस्तुक उपमानकेँ समक्ष रखलासँ पहिल वस्तुक ज्ञान भऽ जाइत अछि ।

यथा- 'जइ' 'जौ'क समान होइछ । एहि उपमानसँ 'जइ' केँ जे नहियो देखने छथि से देखला पर चीन्हि जयताह ।

3 कोषसँ- किछु शब्दक अर्थ कोषसँ ज्ञात होइत अछि । यथा- भुवनभास्करक गति तेज अछि । एतय 'भुवन' आ 'भास्कर' क अर्थ कोषसँ ज्ञात होइत अछि ।

4 आप्तवाक्यसँ- प्रामाणिक व्यक्तिकेँ आप्त पुरुष कहल जाइत अछि आ हुनके वाक्यकेँ आप्त वाक्य कहल जाइछ । यथा- कोनो आप्त पुरुष अज्ञानी व्यक्तिकेँ घड़ी देखा कऽ ओकरा 'घड़ी' कहैत अछि तँ श्रोता अर्थ बूझि जाइत छथि ।

5 व्यवहारसँ- व्यवहारसँ शब्दक ज्ञान होइत अछि । शिशु परिवारक सदस्यक व्यवहारसँ शब्दक ज्ञान प्राप्त करैछ । बिना कोनो पढ़ाइक ओ कतेको वस्तुक ज्ञान प्राप्त करैत अछि ।

6 सिद्धपदक सान्निध्यसँ- यथा मधुशालामे मधु पीबि सभ मदमत्त अछि । एतय मधुक अर्थ मद्य होइत अछि, मीठ मधुसँ नहि । कारण मधुशालामे तकर कोनो प्रयोजन नहि होइत छैक । सम्पर्कक कारणेँ मधुसँ मद्यक बोध होइत अछि ।

7 वाक्यशेषसँ- एक वाक्यसँ कोनो दोसर वाक्यक शब्द ज्ञान प्राप्त होइत अछि तँ ओकरा वाक्य शेष कहल जाइछ ।

8 विवृतिसँ- विवृतिक अर्थ विवरणसँ होइत अछि । विवरण वा टीका द्वारा कोनो शब्दक अर्थ ग्रहण कयल जाइत अछि ।

अभिधा द्वारा जाहि शब्द सभक अर्थक संबंध ज्ञात होइछ से तीन प्रकारक होइछ –

1 **रूढ़**- जाहि शब्दक खण्ड अथवा व्युत्पत्ति नहि होइत अछि, से रूढ़ कहबैछ । यथा- घर, फल, कमल, देव, मित्र अदि

2 **यौगिक** - जाहिमे प्रकृति-प्रत्ययक योग रहैत अछि, से यौगिक कहबैछ । यथा – पाठशाला, भूपति, आदि ।

3. **योगरूढ़** - जाहि शब्दक विशेष अर्थ होइत अछि । यथा-गणनायक अर्थात् गणेश । एतय गण आ नायक दुनूक अर्थ फराक अछि, मुदा मिलाकऽ अर्थबोध गणेशक होइछ ।

साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ अभिधा शक्तिकेँ 'अग्रिमा शक्ति' सँ सम्बोधित कयलनि अछि। अर्थात् शब्दक अर्थबोधक ई सर्वाधिक सुलभ ओ सरल शक्ति अछि।

लक्षणा-शक्ति

साहित्यदर्पणकार लक्षणा शक्तिक व्याख्या करैत कहैत छथि –

"मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो यथाऽन्योऽर्थः प्रतीयते।
रूढेः प्रयोजनाद्वासौ लक्षणाशक्तिरर्पिता ॥"

अर्थात् मुख्यार्थमे बाधा उत्पन्न भेलापर रूढ़ि वा प्रयोजनकेँ लऽ कऽ जाहि शक्तिक द्वारा मुख्यार्थसँ सम्बन्ध रखनिहार अन्य अर्थ लक्षित हो, तकरा लक्षणा कहल जाइत अछि।

अतएव लक्षणा शक्तिक तीन टा प्रमुख लक्षण भेल।

1. मुख्यार्थमे बाधा 2. मुख्यार्थक सम्बन्ध 3. रूढ़ि ओ प्रयोजन।

1. लक्षणा शक्तिक प्रयोग तखन होइछ जखन मुख्यार्थमे बाधा उत्पन्न होइत अछि। यथा- कोनो छात्रकेँ शिक्षक कहैत छथि जे 'अहाँ गदहा छी'। एकर अर्थ पशुसँ नहि अछि। किएक तँ छात्रमे गदहाक आकार-प्रकारक कल्पना असंभव।

2 मुख्यार्थक बाधा भेलापर जे अन्य अर्थग्रहण कयल जाइत अछि ओकर आ मुख्यार्थक किछु योग सम्बन्ध रहैत अछि। एकरे मुख्यार्थक सम्बन्ध कहल जाइत अछि। यथा- 'राम गदहा अछि' मे गदहाक मुख्यार्थक संग ओकर सदृश मनुष्यक अज्ञानता आदिक सादृश्यक योग अछि।

3 उपर्युक्त दुनू बातक अतिरिक्त रूढ़ि एवं प्रयोजनक रहब लक्षणाक लेल आवश्यक अछि।

रूढ़िक अर्थ भेल परम्परासँ प्रसिद्ध। मूर्खक लेल 'गदहा' शब्दक प्रयोग रूढ़ अछि। तहिना कोनो प्रयोजनविशेषकेँ सूचित करब, जे बिना लक्षणक प्रकट नहि होइत अछि। 'महाराणा प्रतापक घोड़ा हवा छल'। एतय हवाक तात्पर्य तेज गतिसँ प्रयोजन अछि। घोड़ाक गति अति तेज छल।

लक्षणाक मुख्यतः दू प्रकार अछि।

1 रूढ़िमूला लक्षणा 2 प्रयोजनवती लक्षणा

1 **रूढ़िमूला लक्षणा**- रूढ़ि लक्षणा ओ थिक, जाहिमे रूढ़िक कारण मुख्यार्थकेँ छोड़िकऽ ओहिसँ सम्बन्ध राखयवला अन्य अर्थ ग्रहण कयल जाय । यथा-उड़ीसा गरीब अछि । एतय उड़ीसासँ उड़ीसावासीक बोध होइछ । उड़ीसा तँ राज्य थिक ओ गरीब नहि भऽ सकैछ ।

2 **प्रयोजनवती लक्षणा**- जखन कोनो विशेष प्रयोजन वा उद्देश्यक कारण लक्षणा कयल जाय, तखन प्रयोजनवती लक्षणा होइत अछि । यथा- स्टेशन पर घर अछि । एहि वाक्यमे सर्वप्रथम मुख्यार्थक बाधा होइत अछि । कारण कोनो घर स्टेशन पर नहि भऽ सकैत अछि । तखन मुख्यार्थक संग लक्ष्यार्थक योग भेल जे स्टेशनक समीप घर अछि । एतय प्रयोजन अछि समीपता देखायब ।

प्रयोजनवती लक्षणाक दू भेद अछि –

(क) **गौणी** प्रयोजनवती लक्षणा- जखन समान गुण वा सादृश्य सम्बन्धक कारण लक्षणा कयल जाय, तखन गौणी प्रयोजनवती लक्षणा होइत अछि । यथा- मुखकमल । मुँह कमल तँ नहि भऽ सकैछ, मुदा ओकरा सदृश कोमल तँ अवश्ये भऽ सकैछ । तेँ सादृश्ये गौणी लक्षणाक कारण अछि ।

(ख) **शुद्धा** लक्षणा - जाहिमे सादृश्य सम्बन्धक अतिरिक्त अन्य सम्बन्धसँ लक्ष्यार्थक बोध होइछ, तकरा शुद्धा लक्षणा कहल जाइछ । यथा- धर्मामृतक पान करू । एतय धर्मकेँ अमृत सदृश मानल गेल अछि । ओना दुनू फराक वस्तु थिक एहिमे मुख्यार्थमे बाधा भेल अछि । धर्म तँ अमृत नहि भऽ सकैत अछि , मुदा समानताक आधार पर एतय अर्थबोध होइछ । तेँ ई शुद्धा प्रयोजनवती लक्षणा भेल ।

गौणी लक्षणाक सेहो दू भेद अछि– **सारोपा** गौणी लक्षणा आ **साध्यवसाना** गौणी लक्षणा ।

सारोपा गौणी लक्षणा– जतय आरोप पूर्णतः स्पष्ट होइछ आ मुख्यार्थ बाधित भेला उत्तर सादृश्य सम्बन्धक आधार पर आरोप आ आरोप्यमान- दुनूक कारण जतय अन्य अर्थक प्रतीति होइत अछि, ओतय सारोपा गौणी लक्षणा होइत अछि । यथा 'नयनवाणसँ युवजन विंध' भेल । एतय नयन पर उपमेय आ तीर पर उपमानक आरोप कयल गेल अछि । उपमेय-उपमान दुनूक उपादान पृथक रूपसँ भेल अछि । अतः लक्षणा शब्द शक्तिएसँ ई उपादान भेलाक कारण एतय सारोपा गौणी लक्षणा भेल ।

साध्यवसाना गौणी लक्षणा- साध्यवसाना शब्दक अर्थ होइछ विलीन अथवा विलीन

कऽ देब । अतएव जतय उपमेयमे उपमानकेँ विलीन कऽ देल जाइत अछि ओतय साध्यवसाना गौणी लक्षणा शब्द शक्ति होइत अछि । यथा- 'आकाशसँ चन्द्रमा पृथ्वी पर आबि गेल अछि' । एतय चन्द्रमासँ कोनो नायिकाक मुँहक बोध होइत अछि । मुख उपमेयमे चन्द्रमा उपमानकेँ विलीन कऽ देल अछि ।

एहिना शुद्धा लक्षणाक दू भेद अछि- (क) उपादान लक्षणा आ (ख) लक्षणलक्षणा

(क) **उपादान** लक्षणा- उपादानक अर्थ होइछ ग्रहण वा लेब । एहिमे वाच्यार्थक परित्याग नहि होइत अछि संगहि प्रयोजनीय अर्थ सेहो ग्रहण कयल जाइत अछि । यथा- 'पागक लाज राखू' मे लक्षणासँ अर्थ भेल पागधारीक लाज राखू । एतय पागक अर्थ रहैत अछि मुदा नव अर्थ सेहो आबि जाइत अछि ।

(ख) **शुद्धा लक्षण** लक्षणा- जतय वाक्यार्थक सिद्धिक लेल वाच्यार्थ अपनाकेँ छोड़ि केँ मात्र लक्ष्यार्थकेँ सूचित करय, ओतय शुद्धा-लक्षण लक्षणा होइछ । यथा- 'पेटमे मूस कुदैत अछि' । एतय मुख्यार्थ बाधित अछि । कारण पेटमे मूस तँ नहि कूदि सकैत अछि । मुदा एकर लक्ष्यार्थ भेल भूख लागब ।

लक्षणाक भेद-उपभेदकेँ निम्न तालिकासँ स्पष्ट कयल जा सकैछ ।

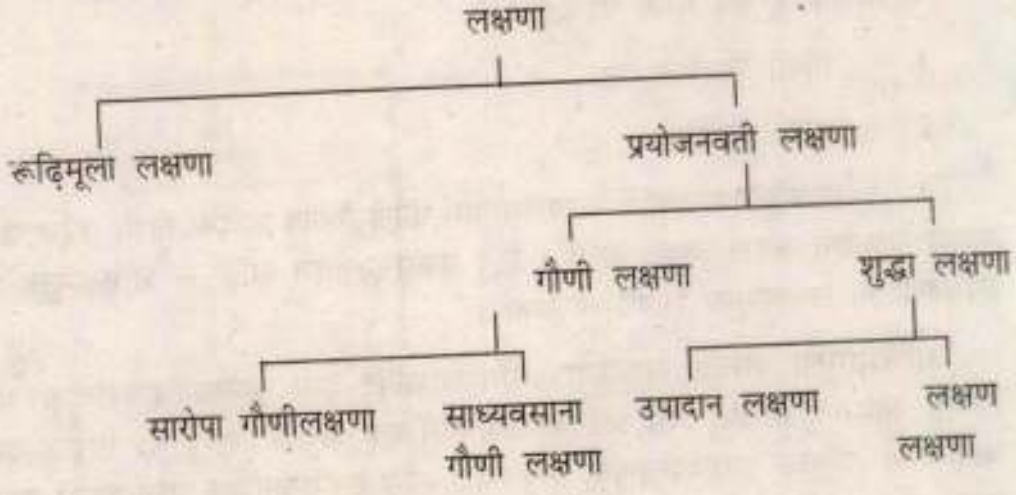

व्यञ्जना शक्ति

शब्दक जाहि व्यापारसँ मुख्य एवं लक्ष्य अर्थसँ भिन्न अर्थक ज्ञान होइत अछि, तकरा व्यञ्जना कहल जाइत अछि ।

अर्थात् अभिधा एवं लक्षणा शब्द शक्ति जखन अपन-अपन अर्थक बोध कराय शान्त

भऽ जाइछ आ तखन जे शक्ति व्यंग्यार्थक बोध करबैछ से व्यञ्जना शब्द शक्ति कहबैछ। अभिधा कोना बातकेँ स्पष्टतया कहैत अछि, लक्षणा सूचित करैत अछि आ व्यञ्जना सूक्ष्म अर्थक बोध करबैत अछि। अभिधा आ लक्षणाक सम्बन्ध मात्र शब्दसँ होइत अछि, मुदा व्यञ्जना शब्दे पर नहि अर्थो पर आधारित अछि।

विशेषेण अञ्जयति प्रकाशयति- अर्थात् जे विशेष (गूढ़) अर्थकेँ प्रकाशित करय से थिक व्यञ्जना। व्यञ्जनामे वि उपसर्गक अर्थ विशेष आ 'अञ्ज्' धातुक अर्थ थिक प्रकाशित करब। तेँ व्यञ्जना शक्ति वाच्यार्थ एवं लक्ष्यार्थकेँ पाछू छोड़ैत ओहिमे सन्निहित प्रच्छन्न अर्थकेँ प्रकट करैत अछि। व्यंग्यार्थ विलक्षण अर्थ थिक।

जेना सन्ध्या समय कोनो बालककेँ खेलाइत देखि पिता मात्र एतबा कहि चलि जाइत छथि जे साँझ भऽ गेल। तेज बुद्धि वला बालक तत्क्षण संकेत बुझि जाइत छथि जे हुनका आब खेल समाप्त कऽ पढ़बाक लेल जयबाक चाही।

कहबाक तात्पर्य जे व्यञ्जना शक्तिक लेल प्रबुद्ध श्रोता होयब आवश्यक। सामान्य व्यक्तिक अर्थ बोध लेल वाच्यार्थ पर्याप्त अछि। बुद्धिक कमीक कारणे ओ व्यञ्जना शक्तिक आनन्द नहि लऽ सकैत छथि। तेँ साहित्यमे व्यंग्यार्थक बड़ महत्त्व अछि।

व्यञ्जनाक दू गोट मुख्य भेद अछि –

1. शाब्दी व्यञ्जना आ
2. आर्थी व्यञ्जना

1. **शाब्दी व्यञ्जना**– जतय व्यंग्यार्थ कोनो विशेष शब्दपर निर्भर करैछ, ओकरा शाब्दी व्यञ्जना कहल जाइछ अछि। ई दू प्रकारक होइत अछि – अभिधामूला शाब्दी व्यञ्जना आ लक्षणामूला शाब्दी व्यञ्जना।

अभिधामूला शाब्दी व्यञ्जना–अभिधा शक्ति द्वारा अनेकार्थक शब्दक संयोग, वियोग, साहचर्य, विरोध, अर्थ आदिक साहचर्यसँ एक अर्थक निर्णय भऽ गेलाक पश्चात् जाहि शब्द शक्तिक द्वारा व्यंग्यार्थक ज्ञान होइत अछि तकरा अभिधा मूला शाब्दी व्यञ्जना कहल जाइत अछि।

जेना- मधु सँ मातल कोकिला, करत-फिरत गुंजार।
पहुक आगमन सुनि जेना, तरुणी पद संचार॥

एतय मधुक अर्थ सुरा नहि, वसन्त भेल । किएक तँ वसन्तमे कार्य सम्पादित करयबाक सामर्थ्य अछि । अर्थात् अनेकार्थक शब्दक एक अर्थक निर्णय ओकर सामर्थ्यक कारणेँ कयल गेल अछि ।

लक्षणामूला शाब्दी व्यञ्जना–जाहि प्रयोजनक लेल लक्षणाक आश्रय लेल जाइत अछि ओ प्रयोजन जाहि शक्ति द्वारा प्रतीत होइत अछि ओकरा लक्षणा मूला शाब्दी व्यञ्जना कहल जाइत अछि ।

उदाहरण लेल संस्कृतक एक पाँती 'गंगायाम् घोषः' अर्थात् गंगा मे बथान छैक । एकर अर्थ-बोध अभिधा आ लक्षणासँ नहि होइछ । गंगामे बथान कोना भऽ सकैछ अथवा गंगाक तटपर बथान कहबाक एतय तात्पर्य नहि अछि, तखन व्यञ्जना शक्तिक शरण जाय पड़ैत अछि आ वक्ताक कथनक भाव स्पष्ट भऽ जाइत अछि । घर परम पावन, पवित्र, शीतल ओ सुखदायक अछि ।

2. **आर्थी व्यञ्जना**– जतय व्यंग्यार्थ सम्पूर्ण अर्थमे मिलल रहैत अछि ओकरा आर्थी व्यञ्जना कहल गेल अछि ।

जेना हे प्रियतम ! अहाँक यात्रा मंगलमय हो ।

मुदा हमर जन्म ओतहि हो जतय अहाँ जा रहल छी । एहि वाक्यमे नायिकाक नायकक प्रति अनन्य प्रेम ध्वनित होइत अछि । ओ सतत नायकक संग रहय चाहैत छथि ।

प्रत्येक साहित्यमे व्यञ्जना शक्तिक प्रयोग उच्च कोटिक मानल गेल अछि ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. शब्द शक्तिसँ की बुझैत छी ?
2. वाचक शब्द ककरा कहल जाइत अछि ?
3. शाब्दी व्यञ्जनाक एक उदाहरण दिअ ।
4. व्यञ्जना शक्तिक महत्त्वक वर्णन करू ।
5. गंगामे बथान अछि । एकर अर्थ स्पष्ट करू । कोन शक्ति द्वारा एकर अर्थ ग्रहण कयल जाइत अछि ।
6. आर्थी व्यञ्जनाकेँ सोदाहरण स्पष्ट करू ।

रस

परिभाषा :

'रस्यते आस्वाद्यते इति रसः' – जकर रसास्वादन कयल जाय से रस थिक ।

दोसर शब्दमे, साहित्यमे जकर आस्वादन कयल जाइत अछि सएह थिक रस । रसक निष्पत्ति विभाव, अनुभाव आ व्यभिचारीभावक संयोगसँ होइत छैक– **'विभावानुभाव व्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पतिः'** ।

भाव- 'भावयन्ति इति भावाः' । अर्थात् जे सहृदय व्यक्तिक हृदयमे रसक अभिव्यक्ति करयबामे कारण होअय से थिक-भाव । वस्तुतः ई मोनक विकार थिक (विकारो मनसो भावः) । एकर भेद अछि- विभाव, अनुभाव एवं व्यभिचारी अथवा संचारीभाव ।

विभाव- स्थायीभावकेँ जगयबाक हेतु कारण थिक विभाव । ई थिक रसक उत्पादक । एकर दू भेद अछि –

(क) **आलम्बन विभाव** एवं (ख) **उद्दीपन विभाव** ।

(क) आलम्बन विभाव- जकर हृदयमे भाव उठय अथवा संचित होअय से थिक आलम्बन विभाव ।

(ख) उद्दीपन विभाव- जे रसक निष्पतिमे प्रेरक तत्त्वक काज करय ओकर उद्दीपकताकेँ बढ़ाबय से थिक उद्दीपन विभाव ।

अनुभाव- 'अनुपश्चात् भवन्ति इति अनुभावाः' । अर्थात् जे भाव मोनमे पछाति आबय से अनुभाव थिक । एकर चारि भेद कहल गेल अछि – कायिक, वाचिक, सात्त्विक ओ आहार्य ।

(क) **कायिक** - अंगचेष्टा द्वारा उत्पन्न भाव कायिक कहबैत अछि ।

(ख) **वाचिक** - वचन द्वारा जे भाव उत्पन्न कराओल जाय से थिक वाचिक ।

(ग) **सात्त्विक** - अकृत्रिम रोमांच, स्वेद, काँपब आदि चेष्टा थिक सात्त्विक अनुभाव ।

(घ) **आहार्य**- आरोपित अथवा कृत्रिम वेष रचनाकेँ आहार्य कहल जाइत अछि ।

(ङ) **संचारीभाव**- 'यानि संचरन्ति तानि व्यभिचारिशब्देन' । संचरणशील अर्थात् अस्थिर मनोविकारकेँ संचारी भाव कहल जाइछ । एकर संख्या तैंतीस अछि-

निर्वेद, ग्लानि, शंका, असूया (ईर्ष्या), मद, श्रम, आलस्य, दैन्य, चिन्ता, मोह, स्मृति, धृति (धैर्य), व्रीड़ा (लज्जा), चपला, हर्ष, आवेग, जड़ता, गर्व, विषाद, औत्सुक्य, निद्रा, अपस्मार (मूर्च्छा), स्वप्न, विबोध, अमर्ष (असहिष्णुता), अवहित्था, उग्रता, मति, व्याधि , उन्माद, त्रास, वितर्क तथा मरण (मृत्युवत् कष्टानुभूति) ।

रसक निष्पत्तिक हेतु उपर्युक्त विभाव, अनुभाव आ संचारीभावक संयोग आवश्यक होइत अछि ।

रसक भेद

प्रथमतः रसक आठ भेद तथा पुनः एकटा नवम भेद कहल गेल अछि । द्रष्टव्य थिक-

शृंगार हास्यकरुण रौद्रवीरभयानकाः

बीभत्साद्भुतसंज्ञेयश्चेत्यष्टौ रसाः स्मृताः ॥

अर्थात् आठ गोट रस थिक- **शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स** तथा **अद्भुत** ।

क्रमशः एकर स्थायीभाव थिक -

रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहो भयं तथा ।

जुगुप्साविस्मयश्चेति स्थायीभावाः प्रकीर्तिताः ॥

अर्थात् क्रमशः स्थायीभाव थिक - **रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा** तथा **विस्मय** ।

एकर अतिरिक्त अछि -

निर्वेदस्थायीभावस्तु शान्तोऽपि नवमो रसः ।

अर्थात् निर्वेद जकर स्थायीभाव थिक से **शान्त** नवम रस थिक । एतय नवो रसकेँ एकत्र ओकर स्थायीभावक संग दर्शाओल जाइत अछि -

रस		स्थायीभाव
श्रृंगार	–	रति
हास्य	–	हास
करुण	–	शोक
रौद्र	–	क्रोध
वीर	–	उत्साह
भयानक	–	भय
बीभत्स	–	जुगुप्सा
अद्‌भुत	–	विस्मय
शान्त	–	निर्वेद

मैथिली साहित्यमे सभ रसक उदाहरण प्रचुर मात्रामे भेटैत अछि । एतय किछु उदाहरण प्रस्तुत अछि –

श्रृंगार (स्थायीभाव-रति)

ससंन परस खसु अम्बर रे देखल धनि देह ।
नव जलधर तर संचरु रे जनि बिजुरी रेह ॥
आजु देखलि धनि जाइत रे मोहि उपजल रंग ।
कनकलता जनि संचरु रे महि निर अवलम्ब ॥

(विद्यापति)

उपर्युक्त वर्णन मुग्धा नायिकाक थिक । एहिमे पूर्वराग स्पष्ट अछि । एतय श्रृंगार रस पाँती-पाँतीमे दृष्टिगोचर होइत अछि ।

हास्य (स्थायी भाव – हास)

केश छत्ता जकाँ माथ हत्ता जकाँ
आँखि खत्ता जकाँ दाँत फारे बुझू ।
बोल रोड़ा जकाँ चालि घोड़ा जकाँ
पेट मोरा जकाँ वा बखारे बुझू ॥

(सीताराम झा)

एतय यद्यपि शंखिनी नायिकाक वर्णन भेल अछि मुदा कवि जाहि ढ़ंगसँ वर्णन प्रस्तुत कयने छथि से हास्य रसक सृष्टि करैत अछि ।

करुण (स्थायीभाव- शोक)

हा रघुनाथ अनाथ जकाँ,

दशकण्ठपुरी हम आइलि छी ।

सिंहक त्रास महावनमे,

हरिणीक समान डेराइलि छी ॥

चन्द्र-चकोर अहैंक सदा,

हम शोक- समुद्र समाइलि छी ।

देवर दोष कहू हम की,

अपना अपराधसँ काइलि छी ॥

(मिथिलाभाषा रामायण)

उपर्युक्त पद्यमे सीताक विलाप अछि जे करुण रसक सृष्टि करैत अछि ।

रौद्र (स्थायीभाव- क्रोध)

गेली सूर्पनखा नटी कपटिनी गोदातटी धर्कटी ।

श्रीरामानुज-तीक्ष्ण-खड्ग लगलैं ख्याता मही नक्कटी ॥

लै सेना खरदूषणादि लड़ला गेला कहाँ से कहू ।

सीता बल्लभसौं विरोध कयलैं से ठाम जेवै अहूँ ॥

(मिथिलाभाषा रामायण)

उपर्युक्त उदाहरणमे रौद्र रस द्रष्टव्य थिक । रामक निन्दा असह्य भेने अङ्गदक रावणक प्रति उक्ति थिक जे क्रोधसँ व्याकुल भऽ बजलाह ।

वीर (स्थायीभाव- उत्साह)

रणमे मचिगेल हाहाकार ।

मुइला मुइला अक्षकुमार ॥

हनुमानक लग क्यो नहि जाय ।

मारिक डरें भूत पड़ाय ॥

(मिथिलाभाषा रामायण)

हनुमानक वीरताक प्रदर्शन उपर्युक्त चौपाइमे स्पष्टतः प्रतीत होइत अछि ।

भयानक (स्थायीभाव- भय)

की रे की रे कहकि झट दै मुँह कीयै सुखेलौ ॥

वीरे वीरे बहुत जन छी त्रास की हेतु भेलौ ॥

हँ हौ हँ हौ विपत्ति बड़ छौ काल लंका समेलौ ।

लंकाध्वंशी कपिक सदृशे दोसरो फेरि ऐलौ ॥

(मिथिलाभाषा रामायण)

अंगदकें लंकामे प्रवेश करितहिँ नगर जरओनिहार हनुमानक पुनः लंका आगमनक शंकासँ सभक मुँह सुखा गेल आ सम्पूर्ण नगरमे भय पसरि गेल ।

बीभत्स (स्थायीभाव - जुगुप्सा)

गट गट गट गट घटक गिरै छथि राव दही संग चूड़ा ।

धड़ि एक बिछलनि पुनि अगुतैला सह सह करइछ सूड़ा ।

(सीताराम झा)

बीभत्स रस स्पष्ट अछि । कारण जे क्यो अपरोजके लोक एना भोजन करत ।

अद्‌भुत (स्थायीभाव - विस्मय)

जमला अर्जुन कमलानाथ

जुगुति उखाड़ल छुइल न हाथ ।

(कृष्णजन्म)

एतय श्रीकृष्णक बाल-लीलाक वर्णन अछि । एकटा बालक द्वारा विशाल जमलार्जुनक गाछकें उखाड़ि कऽ खसयबामे अद्‌भुत रसक सृष्टि भेल अछि ।

शान्त (स्थायीभाव - निर्वेद)

माधव हम परिणाम निराशा ।
तातल सैकत वारि विन्दु सम सुत मित रमणि समाजे ।
तोहें बिसरि मन ताहि समर्पल अब मझु होब कोन काजे ॥
आध जनम हम निन्द गमाओल जरा शिशु कत दिन गेला ॥
निधुवन रमणि रस रंगे मातल तोहें भजब कोन बेला ॥

(विद्यापति)

विद्यापतिक पश्चात्ताप, हुनक दिव्यज्ञानसँ शान्त रस स्पष्ट अछि ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. साहित्यमे रस ककरा कहल जाइछ ?
2. रसक निष्पत्ति कोना होइछ ?
3. रसक अनुभूति ककरा होइछ ?
4. निम्नलिखित शब्दावलीक विषयमे एक वाक्यमे लिखू –

   भाव –

   विभाव –

   अनुभाव –

   व्यभिचारीभाव –
5. रस कतेक प्रकारक होइछ ? सब रसक नाम ओकर स्थायीभाव सहित लिखू ।

अलङ्कार

परिचय: अलंङ्कार दू शब्दक मेलसँ बनल अछि- अलम्+कार जकर अर्थ थिक 'सौन्दर्य' । अर्थात् 'अलंकरोति इति अलङ्कार: ' । तात्पर्य ई जे सौन्दर्यकेँ बढ़बयवला तत्त्व भेल अलङ्कार । ई अलंकार (गहना-गुड़िया) जहिना लोकमे प्रचलित अछि तहिना काव्यमे सेहो । जहिना लोक अपन सौन्दर्यकेँ बढ़बय लेल अलङ्कार धारण करैत अछि तहिना काव्योमे अलङ्कार रहने चमत्कार आबि जाइत छैक (विच्छित्ति: अलंकार:)। तेँ अलङ्कार रहित काव्यकेँ विधवा सदृश कहल गेल अछि – **'अलङ्काररहिता विधवैव सरस्वती'** ।

उत्पत्ति एवं विस्तार:

काव्यशास्त्रक पृष्ठपर भनहि अलङ्कारकेँ प्रतिष्ठित करबाक श्रेय आचार्य भरतकेँ जाइत छनि; मुदा अलङ्कार बीज रूपमे ओही दिनसँ विद्यमान अछि जहियासँ मनुष्य बाजब सिखलक । वेदमे जखने 'जायेव पत्यु: सुवासा' कहल गेलैक तखने अलङ्कारक उपस्थितिक भान भेल । जखनहि आङनमे बूढ़ -पुरान स्त्रीगण लोकनि बच्चाकेँ तेल दऽ- 'इल सन, कील सन, धोबियाक पाट सन' कहलनि तखनहि अलङ्कारक ज्ञान भेल । अत: अलङ्कार मानव सृष्टिक आदिकालहिसँ विद्यमान अछि ।

सर्वप्रथम भरतमुनि मात्र चारि गोट अलङ्कारक नामोल्लेख कयलनि- **'उपमा दीपकं चैव रूपकं यमकं तथा'** । अर्थात् उपमा, दीपक, रूपक एवं यमक । हिनक पश्चात् भामह दण्डी, रुद्रट प्रभृति काव्यशास्त्री लोकनि अलङ्कारक संख्याकेँ बढ़बैत गेलाह आ एहि क्रममे जयदेवक चन्द्रालोकमे अलंकारक संख्या शतावधि भऽ गेल । हिनक पश्चात् संस्कृत परम्परामे अलङ्कारकेँ बढ़ाबा देनिहार अन्तिम आचार्य छलाह कुवलयानन्दकार अप्पय दीक्षित जे एकर संख्या लगभग सबा सय कऽ देलनि ।

मैथिलीमे सेहो अलङ्कारक ग्रंथक अभाव नहि अछि । अनेक विद्वानलोकनि काव्यशास्त्र पर कलम उठओने छथि से सभ क्यो अलङ्कारक चर्चा कयनहिँ छथि; मुदा स्वतंत्र रूपसँ सेहो अलङ्कार विषयक लगभग आठ गोट पुस्तक प्रकाशित अछि ।

वर्गीकरण :

अलङ्कारक संख्यामे बृद्धि होयबाक कारण पठन-पाठनक सुबिधाक हेतु एकर वर्गीकरणक

आवश्यकता पड़लैक । सर्वप्रथम अलङ्कारक तीन भेद कयल गेल–

(i) शब्दालंङ्कार (ii) अर्थालङ्कार तथा (iii) उभयालङ्कार

(i) शब्दालङ्कार :

जखन शब्दकेँ सुनितहिँ सौन्दर्य-बोध होअय तखन शब्दालङ्कार होइत अछि । एहि अलङ्कारमे कवि लोकनि अपन शब्द भण्डारसँ सुन्दर-सुन्दर शब्दक चयन कऽ ओकरा क्रममे सजबैत काव्य-सृजन करैत छथि । शब्दालङ्कारक निम्नलिखित भेद अछि –

(1) अनुप्रास, (2) यमक, (3) श्लेष, (4) वक्रोक्ति, (5) वीप्सा, (6) पुनरूक्तवदाभास तथा (7) पुनरुक्ति प्रकाश ।

उपर्युक्त शब्दालङ्कारमेसँ प्रमुख अछि अनुप्रास, यमक एवं श्लेष ।

(1) अनुप्रास :

लक्षण: **'वर्ण साम्यमनुप्रासो वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्'** । अर्थात् स्वरमे विषमतो रहने वर्ण साम्य होअय तँ अनुप्रास अलङ्कार थिक । यथा - 'शूर' एवं 'शव' मे 'श' केर मात्रामे भिन्नता अछि तथापि अनुप्रास अलङ्कार कहाओत । कवि लोकनि तँ अनुप्राससँ कतहु-कतहु कविताकेँ तेना ने सजा दैत छथि जे पढ़ि कऽ आनन्द विभोर भऽ जायब ।

उदाहरण :

(क) की कहु कवि प्राण बचाउ ।
कामिनीक कोमल-कपोल कुच-कौशल
कान्ति-कलित कय- कल्पनाक कलुषित निकुञ्जमे
काँटहिँ- काँट घुमाउ ।

– (कवि चूड़ामणि 'मधुप')

उपर्युक्त पंक्तिकेँ बेरि-बेरि पढ़ू आ 'क' केर बहुश: आवृत्ति देखि अनुप्रास अलङ्कारक चमत्कारसँ आनन्दक अनुभव करू ।

(ख) नन्दी निकटे नागेश नटेश्वरनाथ नित्य नाचथि नङटे ।
नयनानल नियमित निशानाथ नटवर नकारमय नमस्कार ॥

मदनान्तक मृत्युञ्जय महेश मानी मशान निलयम महेश ।

महिमामय माटिक महादेव मनसा मकारमय नमस्कार ॥

('सुमन')

एतय प्रथम पद्यमे 'न' तथा द्वितीय पद्यमे 'म' केर आवृत्तिसँ अनुप्रास अलङ्कार भेल अछि ।

अनुप्रास अलङ्कारक सेहो पाँच भेद अछि - छेकानुप्रास, श्रुत्यनुप्रास, वृत्यनुप्रास, लाटानुप्रास एवं अन्त्यानुप्रास । एकर सभक विवेचन एतय अभीष्ट नहि अछि ।

(2) यमक :

यमकक अर्थ होइत अछि युग्म । एहि अलङ्कारमे एक शब्दक दू वा दूसँ अधिक बेर अर्थभिन्नताक आवृत्ति होइत अछि । यदि अर्थभिन्नता नहि रहय आ मात्र दू बेरि आवृत्ति होअय तऽ वीप्सा अलङ्कार होइत अछि-'**वीप्सायां द्विरुक्तिः**' ।

लक्षण :

सत्यर्थे पृथगर्थाया: स्वर-व्यञ्जन सेहते: ।

क्रमेणतणैवा वृत्तिर्यमकं विनिगद्यते ॥

अर्थात् कोनो शब्दक दू वा अधिक बेर अर्थभिन्नताक संग आवृत्ति होअय तँ यमक अलङ्कार होइत अछि ।

उदाहरण :

(क) सारंग नयन वयन पुनि सारंग

सारंग तसु समधाने ।

सारंग उपर उगल दस सारंग ।

केलि करए मधुपाने ॥

(विद्यापति)

उपर्युक्त पद्यमे सारङ्गक अनेक बेरि प्रयोग भेल अछि जकर अर्थ सेहो पृथक-पृथक अछि । सारंगक अर्थ थिक क्रमशः - हरिण, कोकिल, धनुष (कामदेवक), कमल (पयोधर), भ्रमर (आँखि, आङुर दसोटा) । अतः यमक अलङ्कार भेल ।

(ख) जब हरि गरजल तब हरि बरसल
हरिक शबद सुनि हरि चललाह
बाटहिँ बिलैल हरि हरिकेँ देखैत हरि
हरिक प्रतापसँ हरि बचलाह ॥

उपर्युक्त पद्यमे हरिक अर्थ थिक क्रमशः- बेङ, मेघ, साँप, साँप, गरुड़, साँप, विष्णु बेङ। एतय हरिक भिन्न-भिन्न अर्थ रहने यमक अलङ्कार अछि।

(3) श्लेष :

श्लेष श्लिष् धातुसँ बनल अछि जकर अर्थ थिक सटल वा चिपकल रहब। एहि अलङ्कारमे दू वा दूसँ अधिक अर्थ एकहि शब्दमे मिझरायल रहैत अछि।

लक्षण :

श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते।

जतय दू वा अधिक अर्थ एकहि शब्दमे मिझरायल रहैत अछि ओतय श्लेष अलङ्कार होइत अछि।

उदाहरण :

जनिक जनक कश्यप स्वयं
लोकवेदमे ख्यात।
से यदि सेवथि वारुणी
तँ की अद्भुत बात ॥

(एकावली-परिणय)

उपर्युक्त पद्यमे 'कश्यप' एवं 'वारुणी' दुनू श्लिष्ट शब्द थिक जकर अर्थ थिक क्रमशः कश्यप मुनि एवं मद्य तथा पश्चिम दिशा एवं मदिरा। दुनू प्रकारक अर्थक संगति बैसैत अछि। अतः एतय श्लेषालङ्कार भेल।

(ii) **अर्थालङ्कार**

मैथिलीमे अर्थालङ्कारक संख्या पर्याप्त अछि। एतय हम किछु प्रमुख अलंकारहिक चर्चा करब अपेक्षित बुझैत छी। कोनो पद्यक अर्थ बुझलाक बाद जँ ओहिमे चमत्कारक आभास होइत अछि तँ अर्थालङ्कार कहबैत अछि।

अर्थालङ्कारक मूल थिक उपमा प्रपञ्च । अर्थालङ्कारकेँ बुझबाक हेतु उपमाक चारूटा अंगपर ध्यान देब आवश्यक अछि । उपमाक चारिटा अंग अछि- उपमेय, उपमान, वाचक शब्द एवं साधारण धर्म । एतय निम्नलिखित उदाहरणक अवलोकन करू -

हिनक हस्ततल कमल सन लाल छनि ।
उपमेय उपमान वाचक साधर्म्य

एहि उदाहरणसँ स्पष्ट अछि जे जकर उपमा देल जाय से उपमेय, जकरासँ उपमा देल जाय से उपमान कहबैछ । अर्थात् जाहि विषयक वर्णन करबाक हो से थिक- उपमेय, जाहिसँ तुलना करबाक हो से थिक – उपमान, गुण थिक-साधारण धर्म तथा सन, जेना, जकाँ इत्यादि वाचक शब्द थिक ।

एतय प्रमुख अर्थालङ्कारक लक्षण एवं उदाहरणक व्याख्या कयल जा रहल अछि -

उपमा :

लक्षण-

'साधर्म्यम् उपमा भेदे'

अर्थात् भेद रहितो जतय समानताक आधारपर अभेद देखाओल जाय से थिक उपमा अलंकार ।

उदाहरण -

होएत शम्भु सन ओ उदार
विद्याक प्रजापति सम अगार ।
सुरगुरुकेँ बुद्धिक बलेँ जीति
शुक्रहुकेँ देत सिखाए नीति ॥

(एकावली-परिणय)

उपर्युक्त पद्यमे ओ (एकवीर)-उपमेय, शम्भु-उपमान, उदार-साधर्म्य तथा सन वाचक थिक । अतः उपमालङ्कार भेल । एतऽ उपमाक चारूटा तत्त्व विद्यमान अछि– तेँ एकरा पूर्णोपमा कहबैक ।

रूपक :

लक्षण-

'रूपकं रूपितारिपि विषये निरपह्नवे'

जतय उपमेय पर उपमानक आरोप होअय ओतय रूपक अलङ्कार होइत अछि ।

उदाहरण -

ता पुन अपरुप देखल रे
कुच-युग- अरविन्द ।
विकसित नहि किछु कारण रे
सोझाँ मुख- चन्द ॥

(विद्यापति)

उपर्युक्त पद्यमे कुच-युग पर अरविन्दक तथा मुख पर चन्दक आरोप अछि । अत: रूपक अलङ्कार भेल ।

उत्प्रेक्षा :

लक्षण - **'भवेत् सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना'**

प्रकृत (उपमान)क अप्रकृत (उपमेय) मे सम्भावनाकेँ उत्प्रेक्षा अलङ्कार कहल जाइत अछि । एहिमे 'जेना', जकाँ इत्यादि वाचक शब्दक प्रयोग होइत अछि ।

उदाहरण -

ससन परस खसु अम्बर रे
देखल धनि देह ॥
नव जलधर तर संचरु रे
जनि बिजुरी रेह ॥

(विद्यापति)

एतय वस्त्राञ्चल पर कारी मेघक तथा देह पर कनक लताक सम्भावना व्यक्त कयल गेल अछि । अत: उत्प्रेक्षालङ्कार भेल ।

विभावना :

लक्षण- **'विभावना विनाऽपि स्यात् कारणं कार्य्य जन्मचेत् ।**

अर्थात् जतय बिनु कारणहि कार्योपत्ति होअय ओतय विभावना अलङ्कार होइत अछि । सामान्यतया कोनो कार्यक हेतु कारण अपेक्षित रहैत छैक मुदा एहि अलङ्कारक इएह वैशिष्ट्य छैक जे एहिमे कारणक अभावमे कार्योत्पत्ति देखबामे आओत ।

उदाहरण -

तुहिन शीतलो चन्द्र रुचि देल विरहिकेँ दाह ।
दैव विमुख भेलेँ जनक नीको कर अधलाह ॥

(एकावली-परिणय)

एतय शीतलता प्रदान कयनिहार चन्द्रमा विरहवेदनासँ व्यथित लोककेँ तपबैत छथि जे बिनु कारणहि कार्योत्पत्ति थिक । वस्तुतः तपयबाक हेतु आगिक प्रयोजन होइत छैक मुदा चन्द्रमामे आगि कतय पाबी ? तथापि ओ कामान्ध, विरहवेदनासँ व्यथित व्यक्तिकेँ दग्ध करैत अछि जे अकारणहि कार्योत्पत्ति कहाओत । अतः एतय विभावनालंकार भेल ।

विशेषोक्ति :

लक्षण- **'सति हेतो फलाभावे विशेषोक्तिः'** ।

जतय कारण अछैतहुँ कार्योत्पत्ति नहि होअय ओतय विशेषोक्ति अलङ्कार होइत अछि । ई विभावनाक विपरीत अलङ्कार थिक । एकर प्रमुख दूटा भेद अछि- उक्त निमित्ता एवं अनुक्तनिमित्ता । पहिलमे कार्योत्पत्ति नहि होयबाक कारण कथित रहैछ आ दोसरमे नहि ।

उदाहरण - उक्तनिमित्ता विशेषोक्ति -

(क) बिष कंठहु उर भुजग भयङ्कर
किन्तु न होथि मलीन ।
मस्तक चन्द्र जटा बिच गंगा ।
तेँ होइथ नहि दीन ॥

(अलङ्कार भास्कर)

उपर्युक्त पद्यमे कंठमे बिष रहने तथा हृदयस्थल पर भयङ्कर सर्प रहने मृत्युक पर्याप्त कारण अछि मुदा (शिवक) मृत्यु नहि होइत अछि । अत: विशेषोक्ति अलङ्कार भेल । एतय मृत्यु नहि होयबाक कारण सेहो कथित अछि जे मस्तक पर चन्द्र विराजमान छथि जाहिसँ अमृत टपकैत छैक तथा गंगाक जल शीतलता प्रदान करैत छथि । अत: एकरा उक्तनिमित्ता विशेषोक्ति अलङ्कार कहल जायत ।

(ख) अनुक्तनिमित्ता विशेषोक्ति-

आनन पूर्ण सुधांशु सन्निधानहुँ प्रमुदित रहि
पलको भरि कुच- चक्रबाक जोड़ी बिछुड़य नहि ।
अथवा सरसिज युगल कनेको हो न संकुचित
ई कन्दर्प नरेन्द्रनीति अनुभावक समुचित ।।

(एकावली-परिणय)

उपर्युक्त पद्यमे मुखरूपी पूर्णचन्द्रक उपस्थित रहितहुँ पलमात्रोक हेतु कुचरूपी चक्रवाकक जोड़ीमे बिछुड़न नहि अबैत अछि । सामान्यतया चकबा-चकबीक मिलन दिनमे होइत छैक आ रातिमे दुनू फराक-फराक रहैत अछि । मुदा एतय मुग्धा नायिकाक सौन्दर्य-वर्णनक क्रममे कहल गेल अछि जे हुनक मुख (पूर्णचन्द्र) क समक्ष हुनक युगल पयोधर (चक्रवाकक जोड़ी) अछि जे रातियोमे एकत्र अछि । अत: अनुक्त निमित्ता विशेषोक्ति भेल । एतय कारण नहि कथित अछि ।

अप्रस्तुतप्रशंसा :

लक्षण- **'अप्रस्तुतप्रशंसा स्यात् सा यत्र प्रस्तुताश्रया ।'**

जतय अप्रस्तुत सामान्यक वर्णनसँ प्रस्तुत विशेषक वर्णन हो अथवा अप्रस्तुत विशेषक वर्णनसँ प्रस्तुत सामान्यक वर्णन हो ओतय अप्रस्तुत प्रशंसा अलङ्कार होइत अछि ।

उदाहरण -

कंटक माझ कुसुम परगास
भमर विकल नहि पाबय पास ।
कुसमित मालति पुन पुन देखि
पीबय चाहय जीव उपेखि ।।

(विद्यापति)

एतय प्रस्तुत फूल आ भ्रमरक वर्णन कयल गेल अछि मुदा अभीष्ट अछि नायिका-नायक वर्णन । अतः एहि अलङ्कारकेँ अप्रस्तुत प्रशंसा अलङ्कार कहब ।

प्रतीप :

लक्षण - **'प्रतीपमुपमानस्योपमेयत्वप्रकल्पनम् ।**

जतय प्रसिद्ध उपमानकेँ उपमेयक रूपमे प्रकल्पित कयल जाय ओतय प्रतीपालङ्कार होइत अछि ।

उदाहरण -

कबरी भय चामड़ि गिरि कन्दर
मुख भय चान अकासे ।
हरिण नयन भय स्वर भय कोकिल
गति भय गज बनवासे ॥

(विद्यापति)

उपर्युक्त पद्यमे नायिकाक सौन्दर्य-वर्णन अछि । हुनक केशक कोमलताक भयसँ चमड़ी गाय (जकर रोइयाँसँ चर बनैत अछि) पहाड़क खोहमे नुकायल, मुँहक भयसँ चन्द्रमा आकाश लागि गेलाह । आँखिक भयसँ हरिण, स्वरक भयसँ कोकिल तथा गतिक भयसँ गजराज वनवास लेलक । एतय प्रसिद्ध उपमानक तिरस्कार कयल गेल अछि । अतः प्रतीपालङ्कार भेल ।

व्यतिरेक :

लक्षण-

'उपमानादन्यस्य व्यतिरेकः स एव सः' ।

ई अलंङ्कार प्रतीपसँ बहुत साम्य रखैत अछि । एहिमे सेहो उपमेय द्वारा उपमानक तिरस्कार होइत छैक मुदा तिरस्कारक कारण सेहो कथित रहब आवश्यक छैक ।

उदाहरण -

जौँ श्रीखण्ड सौरभ अति दुर्लभ
तौँ पुनि काठ कठोरे ।

जौँ जगदीश निशाकर तौँ पुनि
एकहि पक्ष इजोरे ॥

(विद्यापति)

उपर्युक्त पद्यमे माधवक वर्णन कयल गेल अछि । हुनका वृक्षमे श्रेष्ठ चंदनसँ तुलना करैत कवि कहैत छथि जे श्रीखण्डमे सुगंध रहितहुँ कठोरता अछि तेँ माधवसँ न्यून छथि आ पुन: चन्द्रमासँ हुनक तुलना करैत कहैत छथि जे एहिमे एकहि पक्षमे इजोत छैक। एतय उपमानक सकारण तिरस्कार कयल गेल अछि । अत: व्यतिरेक अलङ्कार भेल ।

अनन्वय :

लक्षण- **'उपमानोपमेयत्वं यदेकस्यैव वस्तुन: ।**

जतय प्रसिद्ध उपमान सभ उपमेयक समक्ष विफल भऽ जाइत अछि ओतय कवि उपमेयेकेँ उपमान मानि लैत छथि । एहन स्थितिमे अनन्वयालङ्कार होइत अछि ।

उदाहरण -

मैथिलीक रससिद्ध कवि
सुमन नाम अन्वर्थ ।
अपना सन अपनहि थिका
उपमा ताकब व्यर्थ॥

(तन्त्रनाथ झा)

एतय कविवर सुमनक तुलना कोनो आन कविसँ नहिकऽ हुनका अपनहिसन कहबामे अनन्वयालङ्कार भेल अछि ।

काव्यलिङ्ग :

लक्षण -

काव्यलिङ्गं हेतोर्वाक्यपदार्थता ।

जतय वाक्यार्थ वा पदार्थ कारण बनि कऽ आबि जाइत अछि ओतय काव्यलिङ्ग अलङ्कार होइत अछि ।

उदाहरण-

ई स्तुति सुनि हरि तनिका उठाय
दुहु करसँ लेलनि उर लगाय ।
छथि के एहन कारुणिक आन
जे भावहु जन कृतकृत्य जान ॥

(एकावली-परिणय)

उपर्युक्त पद्यमे 'छथि के एहन कारुणिक आन' कारण बनि कऽ आयल अछि जे समस्त वाक्यार्थक समर्थन करैत अछि । अतः काव्यलिङ्ग अलंङ्कार भेल ।

अर्थान्तरन्यास :

लक्षण-

सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते ।
यत्तु सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येणेतरेण वा ॥

जतय सामान्यसँ विशेषकेँ वा विशेषकेँ सामान्यसँ साधर्म्य वा वैधर्म्य द्वारा समर्थन कयल जाय ओतय अर्थान्तरन्यास अलङ्कार होइत अछि ।

उदाहरण-

धयलक तहिना ओ केलि हेतु
नरपति तनयाकेँ कालकेतु ।
चलि सकल न किछु ककरो उपाय
विधि विमुख रहथि तँ के सहाय ॥

(एकावली-परिणय)

उपुर्यक्त पद्यक अन्तिम चरण 'विधि विमुख रहथि तँ के सहाय' सामान्य वाक्य थिक जाहिसँ पद्यार्थक समर्थन कयल गेल अछि अतः अर्थान्तरन्यास अलङ्कार भेल ।

संदेह :

लक्षण - **'संदेहः प्रकृतेऽन्यस्य संशयः प्रतिभोत्थितः'** ।

जतय उपमेयमे उपमानक संदेह होअय ततय संदेहालङ्कार कहबैत अछि ।

उदाहरण -

कनकलता अरविन्दा

दमना माँजरि उगि गेल चन्दा ।

के बोल भमए भमरा

केओ बोल नहि नहि चलए चकोरा ॥

(विद्यापति)

उपर्युक्त पंक्तिमे संदेह उपस्थित अछि जकर निराकरण बादमे भऽ जाइत छैक । अत: संदेहालङ्कार भेल ।

भ्रान्तिमान :

लक्षण-

'भ्रान्तिमानन्यसंवित्तुल्यदर्शने' ।

जतय उपमेयमे उपमानक एहन संदेह होइत छैक जकर अन्त तक निराकरण नहि होअय ततय भ्रान्तिमान अलङ्कार होइत अछि ।

उदाहरण-

(क) पैसय लागल जानि बिल व्याल सूँढ़मे व्याल ।

गजो श्याम कुसियार बुझि पकड़ि दबाओल गाल ॥

(ख) शङ्कितथल मे दम्पतिक, भेँट रात्रिमे भेलि ।

पत्नी भागलि भूत भ्रम, पति ओ बूझि चुड़ैलि ॥

(चन्द्राभरण)

उपर्युक्त पद्यमे सर्प एवं हाथी दुनूकेँ भ्रम भऽ जाइत छैक जाहिसँ परस्पर भ्रान्ति अलङ्कार होइत अछि । एही प्रकारेँ दोसर दोहामे पत्नी पतिकेँ भूत तथा पति पत्नीकेँ चुड़ैल बुझि भयभीत होयबाक वर्णन अछि ।

दृष्टान्त :

लक्षण-**'दृष्टान्तः पुनरेतेषां सर्वेषां प्रतिबिम्बनम्'** ।

जतय कोनो दृष्टान्त वाक्य द्वारा अभीष्ट अर्थक समर्थन कयल जाय ततय दृष्टान्त अलङ्कार होइत अछि ।

उदाहरण -

तत संभव शिशु बचबाक कोन
की बाट पड़ल रह कतहु सोन ?

एतय 'की बात पड़ल रह कतहु सोन ? ' दृष्टान्तस्वरूप उद्धृत अछि जाहिसँ ऊपरवाला वाक्यक समर्थन भेल अछि । अतः दृष्टान्त अलङ्कार भेल ।

निदर्शना :

लक्षण - **'अभवनवस्तुसम्बन्धः उपमा परिकल्पकः'** ।

जतय असम्बन्धमे सम्बन्ध देखाओल जाय ओतय निदर्शना अलङ्कार होइत अछि ।

उदाहरण-

जहिना गिरिमे कड़का प्रहार ।
सागर धारामे घनासार ॥
उपदेश वाक्य खलमे सुधीक ।
रोपब थलमे अम्भोजनीक ॥
नहि होय फलोत्पादन समर्थ ।
सभटा तहिना भए गेल व्यर्थ ॥

(एकावली परिणय)

उपर्युक्त पद्यमे अनेक असम्बद्ध वाक्य सभ अछि जाहिमे सम्बन्धक स्थापना कयल गेल अछि । अतः निदर्शना अलङ्कार अछि ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. काव्यक सन्दर्भमे अलंकार की थिक ?
2. शब्दालङ्कार ककरा कहल जाइछ ?
3. निम्नलिखित अलंकारक वर्णन सोदाहरण करू :

   अनुप्रास, यमक एवं श्लेष ।
4. अर्थालङ्कार ककरा कहल जाइछ ?
5. निम्नलिखित अर्थालङ्कारक सोदाहरण उल्लेख करू :

   उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, काव्यलिङ्ग, भ्रान्तिमान एवं विभावना
6. निम्नलिखितमे अन्तर स्पष्ट करू :

   (क) शब्दालङ्कार ओ अर्थालङ्कार

   (ख) विभावना ओ विशेषोक्ति

   (ग) प्रतीप ओ व्यतिरेक ।

छन्द

छन्द एकटा एहन शास्त्र थिक जाहिसँ कविताक गरिमाकेँ तौलल जाइत अछि । एकर प्रयोजन गद्यमे नहि मात्र पद्येटामे होइत छैक आ सेहो प्राचीन परम्पराक कवितामे जकरा लेल कहल गेल छैक -

पद्यं चतुस्पदी तच्य वृत्तं जातिरितिद्विधा ।

वृत्तमक्षर संख्यातं जातिर्मात्राकृता भवेत् ॥

अर्थात् कविताक हेतु चारि चरण रहब आवश्यक छैक । पद्यकेँ प्रथमत: द्विधा विभाजन कयल गेलैक अछि – **वृत्त** (जाहिमे वर्णक गणना होइछ) एवं **जाति** (जाहि मे मात्राक गणना होइछ) ।

छन्द थिक बन्धन–जे कविलोकनिकेँ काव्यादर्शक पथ पर स्थिर रखने रहैछ, छन्द थिक कुम्हारक फर्मा– जाहिमे वर्ण विन्यस्त भऽ जाइछ, छन्द थिक तराजू- जाहि पर काव्य गरिमाकेँ तौलल जाइछ , छन्द थिक सरिता जकरा – सभ नहि पार कऽ सकैछ ।

उत्पत्ति एवं विस्तार:

छन्दक उत्पत्ति कहिया भेल से कहब कठिन । जहियासँ मानव सृष्टि अछि तहिएसँ छन्दक बीज विद्यमान अछि । वैदिक ऋचा सभ सेहो छन्दोबद्ध अछि आ तेँ ओकर गायन होइत छैक आ वेदकेँ छन्दस् सेहो कहल जाइत छैक ।

बाल्मीकिक कंठसँ अनायासे जँ एकटा श्लोक निकलि पड़लनि तँ ओहो छन्दोबद्धे । द्रष्टव्य थिक -

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगम: शाश्वती: समा: ।

यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधी: काममोहितम् ॥

उपर्युक्त पद अनुष्टुप छन्दमे अछि । संस्कृत साहित्यमे वार्णिक छन्दक प्रचुरता अछि मात्रिक छन्दक अल्पता । मैथिलीमे मात्रिक छन्दक प्रचुरता अछि वार्णिक छन्दक विरलता । संस्कृतमे तँ अभ्यासक बल पर पण्डित लोकनि छन्दोबद्ध भाषणो कऽ लैत छलाह । पं. भूपनारायण झा कहैत छलाह–

अमुष्यां सभायां ममैषा प्रतिज्ञा ।

भुजङ्गप्रयातंविना नैव वाच्यम् ॥

छंदसँ सम्बद्ध किछु पारिभाषिक शब्दावली :

(i) चरण अथवा पाद– कोनहु छंद अथवा श्लोकक एक पद अर्थात् श्लोक वा पदक चतुर्थांशकेँ चरण अथवा पाद कहल जाइछ । प्रत्येक छंदमे प्रायः चारि चरण वा पाद रहैत अछि । प्रत्येक चरणमे वर्ण किंवा मात्राक संख्या क्रमानुसार नियोजित रहैत छैक । पहिल एवं तेसर चरणकेँ 'विषम' तथा दोसर एवं चारिम केँ 'सम' कहल जाइछ ।

(ii) वर्ण एवं मात्रामे अंतर– वर्णमे ह्रस्व ओ दीर्घ रहला पर वर्ण-गणनामे कोनहु अंतर नहि पड़ैत अछि, मुदा मात्रा-गणनामे ह्रस्व-दीर्घसँ बहुत अंतर पड़ि जाइत छैक । यथा- 'भरत' एवं 'भारती' शब्दकेँ लेल जाय । दुनूमे तीन वर्ण अछि, मुदा पहिलुकमे तीन मात्रा तथा दोसरमे पाँच मात्रा अछि ।

वर्गीकरण :

छन्दक प्रथमतः द्विधा विभाजन कयल जाइत अछि– **वार्णिक** एवं **मात्रिक** । पुनः वार्णिकक तीन एवं मात्रिकक तीन भेद होइत अछि । द्रष्टव्य थिक –

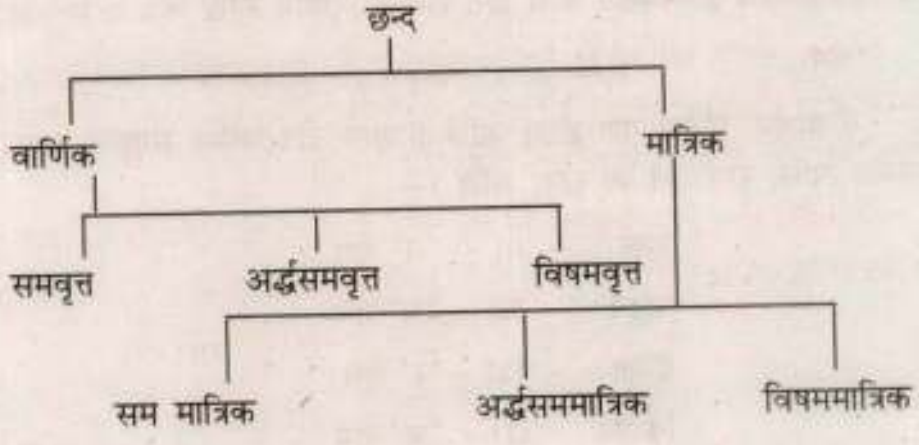

वार्णिक छन्द :

वार्णिक छन्दमे वर्णक गणना कयल जाइत अछि । सम वृत्त छन्दक चारू चरणमे समान वर्ण रहैत अछि । अर्द्ध समवृत्तक प्रथम एवं तेसर चरणमे एक समान तथा दोसर एवं चारिम चरणमे दोसर समान । वार्णिक छन्दमे वर्णकेँ दू भागमे बाँटल जाइत अछि–

(i) लघु एवं (ii) गुरु । लघुकेँ अंग्रेजीक । तथा गुरुकेँ ऽ सँ द्योतित कयल जाइत अछि । एतय गुरु वर्णकेँ बुझबाक हेतु किछु नियम देल जा रहल अछि जाहिसँ लघु वर्ण अपनहि बुझबामे आबि जायत ।

गुरु वर्णक नियम–

(i) व्याकरणक दृष्टिएँ दीर्घ वर्ण गुरु थिक ।

(ii) संयुक्ताक्षरसँ पूर्वक वर्ण गुरु होइत अछि ।

(iii) अनुस्वारयुक्त वर्ण गुरु होइत अछि ।

(iv) चन्द्रबिन्दु युक्त वर्ण गुरु होइत अछि ।

(v) विकल्पसँ पदान्त वर्ण गुरु होइत अछि ।

यति–

यतिर्जीह्वेष्ठ विश्राम स्थानंकविभिरुच्येता ।

साविच्छेद्यविरामाद्या पदैर्वाच्यानिजेच्छया ॥

अर्थात् जतय जीह्वा कविता पढ़बाक समयमे स्वत: विश्राम करय ओ स्थल यति कहबैत अछि । ई व्यवस्था कवि द्वारा छन्दकेँ दृष्टिमे राखि कऽ कयल जाइत अछि ।

गण–

तीनवर्णक एकटा गण होइत अछि । एतय तीन वर्णक समूहक जतेक प्रकार भऽ सकैत अछि, दर्शाओल जा रहल अछि ।–

हमर – III – 'न' गण

पाहुन – SII – 'भ' गण

देवता – SIS – 'र' गण

किताब – ISI – 'ज' गण

हुनका – IIS – 'स' गण

तमाशा – ISS – 'य' गण

आहार – SSI – 'न' गण

सीताकेँ – SSS –'म' गण

उपर्युक्त गणकेँ दर्शयबाक हेतु एकटा सूत्रक अवलोकत कयल जा सकैत अछि–

'यमाताराज भानसलगं' ।

एतय आदिसँ तीन-तीनटा वर्णक अवलोकनसँ लघु-गुरुकेँ आओरो स्पष्टतापूर्वक बुझल जा सकैत अछि –

यमाता – ISS – य गण

मातारा – SSS – म गण

नाराज – SSI – न गण

राजभा – SIS – र गण

जभान – ISI – ज गण

भानस – SII – भ गण

नसल – III – न गण

सलगं – IIS – स गण

गण वार्णिक छन्दक मूल थिक । एकरा बुझबा लेल एकटा दोसरो महत्त्वपूर्ण सूत्र अछि–

मस्त्रिगुरुः त्रिलघुश्च नकारो
भादिगुरुः पुनरादिलघुर्यः ।
जो गुरुमध्य गतो रल मध्यः
सोन्तगुरुः कथितोन्त लघुस्तः ॥

अर्थात् 'म' मे तीन गुरु 'न' मे तीन लघु 'भ' मे आदि गुरु, 'य' मे आदि लघु, 'ज' मे बीच गुरु, 'र' मे बीच लघु, 'स' मे अन्त गुरु, 'त' मे अन्त लघु वर्ण रहैत अछि । ध्यातव्य थिक जे संयुक्ताक्षर वर्ण एकहिवर्ण मानल जायत तथा हलन्त्य वर्णक गणना नहि कयल जायत ।

प्रमुख वार्णिक छन्द

(1) **द्रुतविलम्बित** : 12 वर्ण प्रति चरण

न भ भ र

लक्षण – III SII SII SIS

द्रुत विलम्बित माहन भौभरौ

द्रुतविलम्बित छन्दक प्रत्येक चरणमे 12 वर्ण रहैत अछि जाहिमे गणक विन्यास अछि – न- भ- भ-र केर क्रममे । ई समवृत्त वार्णिक छन्द थिक ।

उदाहरण -

न भ भ र

। । । ऽ । । ऽ । । ऽ । ऽ

सुजन मैथिल मैथिल वंदिकें

न भ भ र

। । । ऽ । । ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ

सरल भाषण भाषन देथि जे

न भ भ र

। । । ऽ । । ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ

मधुरिमा सन माखन जाड़िकें

न भ भ र

। । । ऽ । । ऽ । । ऽ । ऽ

सरल घोरल घोलल लेथि से ॥

उपर्युक्त पद्यक प्रत्येक चरणमे 12 वर्ण अछि आ गणक संख्या चारि– न-भ-भ- र केर क्रममे ।

2. तोटक : 12 वर्ण प्रति चरण

लक्षण–

स स स स

। । ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ

वद तोटक मध्यि सकारयुतं

तोटक छन्दक प्रत्येक चरणमे 12 वर्ण रहैत अछि जाहिमे गणक विन्यास– स- स - स-स केर क्रममे रहैत अछि । ई समवृत्त वार्णिक छन्द थिक ।

स स स स

। । ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ

तन होत मलान कदापि कहू

स स स स

। । ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ

अङराग लगाओल अत्रि बहू ।

स स स स

। । ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ

पहिरावल से पटजे नितहू

स स स स

। । ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ

नवभव्यद फाटन जे कतहू ॥

उपर्युक्त पद्यक चारू चरणमे 12- 12 गोट वर्ण अछि आ गणक विन्यास स- स- स- स केर क्रममे अछि । अतः ई तोटक छन्द थिक ।

2. भुजङ्ग प्रयात - 12 वर्ण प्रति चरण

लक्षण-

य य य य

। ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

भुजङ्ग प्रयातं चतुर्भिर्यकारैः

भुजङ्ग प्रयात छन्दक प्रत्येक चरणमे 12 वर्ण रहैत अछि जाहिमे गणक विन्यास- य- य- य-य केर क्रममे रहैत अछि । ई समवृत्त वार्णिक छन्द थिक ।

उदाहरण -

य य य य

। ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

अहाँछी चिन्हारे विरञ्चिप्रपौत्रे ।

य य य य

।ऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ

कुकर्मी महाछी करैछी किं शौत्रे ॥

य य य य

।ऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ

गिरीशार्चना छोड़ि ईकी करैछी ।

य य य य

।ऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ

परस्त्री अहाँ छद्मसँकी हरैछी ॥

उपर्युक्त पद्यक प्रत्येक चरणमे बारह गोट वर्ण अछि आ ओहिमे चारूटा 'य' गण अछि । अतः भुजङ्ग प्रयात छन्द भेल ।

4. वसन्त तिलका - 14 वर्ण प्रति चरण

लक्षण-

त भ ज ज गु.गु.

ऽऽ।ऽ।। ।ऽ। ।ऽ।ऽऽ

ज्ञेयं वसन्ततिलकं तभजाजगौगः

वसन्ततिलका छन्दक प्रत्येक चरणमे 14 वर्ण होइत अछि आ एहिमे गणक विन्यास त- भ-ज- ज- गुरु-गुरु केर क्रममे रहैत अछि ।

उदाहरण -

त भ ज ज गु.गु.

ऽऽ। ऽ।।।ऽ।।ऽ। ऽऽ

श्री रामचन्द्र परमेशक दूत जानू

त भ ज ज गु.गु.

ऽऽ। ऽ।। ।ऽ।।ऽ। ऽऽ

लंका निशाचर समस्तक काल मानू ।

त भ ज ज गु.गु.

ऽ ऽ। ऽ।। ।ऽ। ।ऽ।

बाली वली सकल जानल शौर्य सेटा

त भ ज ज गु.गु.

ऽ ऽ। ऽ।। ।ऽ। ।ऽ।

उद्दण्ड अंगद नानीक थिकौह बेटा ॥

उपर्युक्त पद्यक प्रत्येक चरणमे 14 गोट वर्ण अछि जाहिमे गणक विन्यास त- भ -ज-ज-गु. गु. केर क्रममे अछि ।

5. मालिनी : 15 वर्ण प्रति चरण

लक्षण-

न न म य य

।।।।।। ऽऽऽ।ऽऽ।ऽऽ

नन मयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः

एहि छन्दमे 15 गोट वर्ण प्रत्येक चरणमे होइत अछि तथा गणक विन्यास न- न- म- य- य केर क्रम मे रहैत अछि ।

उदाहरण -

न न म य य

।।। ।।। ऽऽऽ।ऽऽ।ऽऽ

रघुपतिक पठौलेँ लाँघिकेँ सिन्धुऐलौँ

न न म य य

।।। ।।। ऽऽऽ।ऽऽ।ऽऽ

तनिक कुशल वार्त्ता जानकीकेँ सुनेलौँ ।

न न म य य

।।।।।। ऽऽऽ।ऽऽ।ऽऽ

क्षुधित बहुत भेलैँ तेँ फलाहार कैलौँ

न न म य य

। । । । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

मरुतसुत हनुमान्नाम की बाँधि लैलौं ॥

उपर्युक्त छन्दक प्रत्येक चरणमे 15 गोट वर्ण अछि जाहिमे गणक विन्यास न- न- म- य- य केर क्रममे अछि । अत: ई मालिनी छन्द भेल ।

6. शिखरिणी : 17 वर्ण प्रति चरण

लक्षण-

य म न स भ ल.गु.

।ऽऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । । । ऽ

रसैरुद्रैश्छिन्नायमन सभलागः शिखरिणी

एहि छन्दक प्रत्येक चरणमे 17 गोट वर्ण रहैत अछि जाहिमे गणक विन्यास य-म-न-स-भ- लघु-गुरु केरक्रममे रहैत अछि ।

उदाहरण -

य म न स भ ल.गु.

। ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । । । ऽ

अरेबा बादावानलसदृश लंका जरइये

य म न स भ ल.गु.

। ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । । । ऽ

अधर्मी लंकेशोतनिक सब पापे करइये ।

य म न स भ ल.गु.

। ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । । । ऽ

पड़ारे रेबाबू किछु न मन काबू करइये

य म न स भ ल.गु.

। ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । । । ऽ

विनापानीराजानृपति पटरानी मरइये ॥

उपर्युक्त पद्यक प्रत्येक चरणमे 17 गोट वर्ण अछि जाहिमे गणक संख्या य- म- न-स-भ- लघु- गुरु केर क्रममे अछि । एहिमे रस (छओ) तथा रुद्र (एगारह) वर्ण पर यति रहैत छैक । अत: शिखरिणी छन्द भेल ।

7. मन्दाक्रान्ता : 17 वर्ण प्रति चरण

लक्षण -

म भ न त त गु.गु.

ऽऽऽ ऽ।।।।।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ

मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैः मोभनौतौगयुग्मम्

मन्दाक्रान्ता छन्दक प्रत्येक चरणमे 17 गोट वर्ण रहैत अछि जाहिमे गणक विन्यास म-भ-न-त-त-गु.गु केर क्रममे रहैत अछि । एहिमे अम्बुधि (4), रस (6) तथा नग (7) पर यति रहैत अछि । ई समवृत्त वार्णिक छन्द थिक ।

उदाहरण-

म भ न त त गु.गु.

ऽऽऽ ऽ।।।।।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ

की रे,की रे,कह कि झट दै मूह कीयै सुखेलौ ।

म भ न त त गु.गु.

ऽऽऽऽ।।।।।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ

वीरे वीरे बहुत जन छी त्रास की हेतु भेलौ ॥

म भ न त त गु.गु.

ऽऽऽ ऽ।।।।।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ

हाँ हौ,हाँ हौ,विपति बड़ छौ काल लङ्का समैलौ ।

म भ न त त गु.गु.

ऽऽऽऽ।।।।।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ

लङ्काध्वंसी कपिक सदृशे दोसरो फेरि ऐलौ ॥

(चन्दा झा)

उपर्युक्त पदक प्रत्येक चरणमे 17 गोट वर्ण अछि जाहिमे विन्यास म-भ-न-त-त-गु. गु. केर क्रममे अछि तेँ मन्दाक्रान्ता छन्द भेल ।

8. **शार्दूलविक्रीडित** : 19 वर्ण प्रति चरण

लक्षण -

म स ज स त त गु.

ऽऽऽ ।।ऽ ।ऽ।।।ऽऽऽ।ऽऽ।

सूर्याश्वैः यदिमः सजौसततगाशार्दूलविक्रीडितम्

सूर्य (12) अश्व (7) पर यति रहैत गणक विन्यास म- स- ज-स- त- त- गु केर क्रममे रहने शार्दूलविक्रीडित छन्द होइत अछि । एहि छन्दमे 19 वर्ण रहैत अछि तेँ छओ गोट गण आ अंतमे एकटा गुरु वर्ण बचि जाइत अछि ।

उदाहरण -

म स ज स त त गु.

ऽऽऽ।।ऽ।ऽ।।।ऽऽऽ।ऽऽ।

एके गोट समुद्र लाँघि अयला, लंकापुरी डाहिकेँ

म स ज स त त गु.

ऽऽऽ।।ऽ।ऽ।।।ऽऽऽ।ऽऽ।

सेकी,बानर देह जानल अहाँ, गेला किला ढाहिकेँ ॥

म स ज स त त गु.

ऽऽऽ।।ऽ।ऽ।।।ऽऽऽ।ऽऽ।

जे अज्ञात कुबुद्धि युद्ध भिड़ला, निष्प्राण से से तहाँ ।

म स ज स त त गु.

ऽऽऽ।।ऽ।ऽ।।।ऽऽऽ।ऽऽ।

सीतान्वेषक-दूत-कर्म बुझले, छी छी अहाँ ओ कहाँ ।

(चन्दा झा)

उपर्युक्त पद्यक प्रत्येक चरणमे 19 वर्ण अछि । जाहिमे गणक विन्यास म-स-ज-स-त-त गु. केर क्रममे अछि तेँ शार्दूल विक्रीडित छन्द थिक ।

मात्रिक छन्द

मात्रिक छन्दमे मात्राक गणना होइत छैक । एहिमे ओहि आठोटा गणक प्रयोजन नहि होइत छैक अपितु एहि प्रकारक छन्दक हेतु पाँचटा नव गणक आवश्यकता छैक, से थिक

ट गण - छओ मात्र - SSS, IIIIII, ISSI, SIIS, SSII, IISS, प्रभृति

ठ गण – पाँच मात्रा - SSI, ISS, IIIII, SIS प्रभृति

ड गण- चारिमात्रा- SS, IIII, ISI SII, IIS

ढ गण - तीनमात्रा- III, SI, IS

ण गण- दू मात्रा- II, S

मैथिली साहित्यमे मात्रिक छन्दक विविधता दृष्टिगोचर होइत अछि । एतय किछु मात्रिक छन्दक उल्लेख कयल जा रहल अछि ।

1. **चौपाइ** : 16 मात्रा प्रति चरण

लक्षण- जँ सोलह चौपाइ कहाबए ।
(गोविन्द झा)

सोलह मात्रा रहने चौपाइ छन्द होइत अछि ।

उदाहरण -

16 मात्रा

II II SI III IISS

नव अनुरागिनि नव अनुरागी ।

16 मात्रा

III ISII II II SS

मिलल दुहू तन गल गल लागी ॥

(मनबोध)

उपर्युक्त पद्यक प्रत्येक चरणमे । 6 मात्रा अछि । अत: चौपाइ छन्द भेल । ध्यातव्य थिक जे लघु वर्णके* एक मात्रा तथा गुरु वर्णके* दू मात्रा गनल जाइत अछि ।

2. **जयकरी** : 15 मात्रा प्रति चरण

लक्षण –

12 मात्रा गु. ल.

S I I I I I I I S I S I

बारह गल जयकरी प्रसिद्ध ।

उदाहरण–

12 मात्रा गु.ल.

I I I I I I I I I I I I S I

भरत सुमति शुभ कहल वशिष्ठ

12 मात्रा गु.ल.

S I I S I I S I I S I

कर्मशुभाशुभ काल बलिष्ठ

12 मात्रा गु.ल.

I S I S I I I I I I S I

अहाँ महाशय महि सविवेक

12 मात्रा गु.ल.

I I I I S I S I I I S I

करब अहींक राज्य अभिषेक ॥

(मिथिलाभाषा रामायण)

उपर्युक्त छन्दक प्रत्येक चरणमे 12+S1=15 मात्रा अछि । अत: जयकरी छन्द भेल ।

3. **रोला** : 16+8=24 मात्रा प्रति चरण

लक्षण–

16 8

S S I I I I S I I S I I S S I I I I

हो सोलह पर आठ कला यदि रोला कहबय ।

सोलह मात्रा पर आठ मात्रा रहले रोला छन्द कहाओत । ई सममात्रिक छन्द थिक ।

उदाहरण-

16 8

। । । ऽ । । । ऽ । । । । । । ऽ । । । ऽ ऽ

कुल कलंक प्रदपुत्र कतहु जनि देथि विधाता ।

16 8

। । । । । । । ऽ । । । । ऽ ऽ । । ऽ ऽ

वरुजन सहथु विषाद रहथु बन्धया भए माता ॥

16 8

। । ऽ । । । । ऽ । । ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ।

धिक अंगद युवराज तपस्वी दूत कहाबए ।

16 8

ऽ ऽ । । । । ऽ । । । । । । । । । । । ऽ । ।

जे मारल छल बालि तनिक जय सतत मनाबए ॥

उपर्युक्त पद्यक प्रत्येक चरणमे 16+8 मात्रा =24 मात्रा अछि । अतः रोला छन्द भेल ।

4. दोहा :

लक्षण-

10 ण गण

ऽ । । । । । । । । । । । । ।

जँ दस पर लघु पुनि णगण

8 गु.ल.

। । । । । । ऽ ऽ ।

विषम चरणमे देल ।

10 ण गण

ऽ । । । । । । ऽ । ऽ

आठ गुरु ल सम पादमे

8 गु.ल.

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ।

तँ दोहा से भेल ॥

दोहा छन्दक विषम अर्थात् प्रथम एवं तृतीय चरणमे 10+।+ण गण रहैत अछि तथा सम अर्थात् दोसर एवं चारिम चरणमे 8+गु+ल रहैत अछि । अत: दोहा छन्द भेल ।

उदाहरण -

10 ण गण 8 गु.ल.

। । । । ऽ ।। । । । । । । । ऽ । । । । । ऽ ।

कयल उपद्रव सभ जनक देखता भलहि जमाय ।

10 ण गण 8 गु.ल.

। । ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । । ऽ ।

टेंगरा पोठी चाल दै रोहुक शीर विषाय ॥

(मिथिलाभाषा रामायण)

उपर्युक्त छन्दक विषम चरणमे 10+ ल+ ण गण तथा सम चरणमे 8+ गु + लघु अछि । अत: दोहा छन्द भेल । ई अर्द्धसम कोटिक छन्द थिक ।

5. सोरठा :

लक्षण - विषम चरण भऽ जाय जँ दोहावत सम चरण ।

'सोरठ' छन्द कहाय अछि प्रसिद्ध से जगत मे ॥

दोहा छन्दक विषम चरण सोरठाक सम चरण भऽ जाइत अछि तथा दोहाक सम चरण सोरठाक विषम चरण भऽ जाइत अछि ।

उदाहरण–

8 गु.ल. 10 ण गण

ऽ ।। ऽ । । ऽ । । । । । ऽ ।। । । । । । । । । ।

जे नृप बान्हथि गेंठ, धन उचितो नहि करथि व्यय ।

8 गु.ल. 10 ण गण

S I I S I I S I S I I S I I I S I I I

सैह कहाबथि ठेँठ, दान-यशो-गणना-समय ॥

(एकावली परिणय)

उपर्युक्त उदाहरण दोहाक विपरीत थिक । लक्षण एके मुदा चरण बदलल । इहो अर्द्धसम मात्रिक छन्द थिक ।

6. **कुण्डलिया** : दोहा+रोला

लक्षण –

10 ण गण 8 गु.ल.

S S S I I S I I I S I I S S S I

जानी कुण्डलिया जखन आबय चारू पाद ।

पहिने दोहा छन्द केर रोला तकरा बाद ॥

16 8

S S I I S S I S I S S I I I I S

रोला तकरा बाद ताहि रूपेँ अबइत हो ।

दोहा-अन्तिम-पाद ओकर जड़िमे पबइत हो ॥

दोहा छन्दक आदि भागमे जे पद आनी ।

सैह एहि रोलाक अंतमे निश्चय जानी ॥

कुण्डलिया छन्द दोहा + रोलाक मिश्रण थिक । पहिने दोहाक चारू पाद आ पुनः रोलाक चारू पाद एकटा एहन क्रममे अबैत अछि जे जाहि शब्दसँ दोहाक आरम्भ होइत अछि ताही शब्दसँ रोलाक अंत होइत तथा दोहाक अंतिम चरण रोलाक प्रथम चरणक जड़िमे आबि जाइत अछि । ई छन्द छओ चरणक प्रतीत होयत यद्यपि आठ चरणक होइत छैक ।

उदाहरण –

छथि मिथिलाञ्चलमे सबहुँ ऊँच नीच मर्मज्ञ ।

परञ्च खेदक बात थिक रहितहु सब शास्त्रज्ञ ॥

रहितहु सब शास्त्रज्ञ धर्म सभ मेटा रहल छी ।
बरद बनाकऽ पुत्र अपन सब बेचि रहल छी ॥
एतबहिमे निज स्वार्थ पूर्त्ति सम देखि रहल छथि ।
अपन पयरमे अपनहि कुड़हरि मारि रहल छथि ॥

(काव्य-वाटिका)

उपर्युक्त पद्यमे दोहा + रोलाक मिश्रण अछि संगहि दोहाक आरम्भ 'छथि' शब्दसँ भेल अछि तँ रोलाक अंत सेहो 'छथि' शब्दसँ भेल अछि । दोहाक अन्तिम पाद 'रहितहु सब शास्त्रज्ञ' रोला छन्दक जड़िमे आबि गेल छैक । अत: कुण्डलिया छन्द भेल ।

7. हरिगीतिका :

लक्षण –

28 मात्रा

S S I I S S I I S S S I S I I S I S

जँ होअय अट्ठाइस मात्रा तँ बुझी हरिगीतिका

हरिगीतिकाक प्रत्येक चरणमे 28 मात्रा रहैत अछि । ई सममात्रिक छन्द थिक ।

उदाहरण–

28 मात्रा

I I S I S I I S I S I I S I S S S I S

पढ़ि लीखि जे न बजैछ हा निज मातृभाषा मैथिली ।
मन ह्वैछ झुटकी सँ तकर हम कान दुनू ऐंठ ली ॥
एहना कुपूतक जीभ सटदै छाउर लेपिकऽ खींचि ली ।
पर खेद जे अधिकार ई हमरा न देलनि मैथिली ।

(सीताराम झा)

उपर्युक्त छन्दक प्रत्येक चरणमे 28 मात्रा अछि । अत: हरिगीतिका छन्द थिक ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. छन्द ककरा कहल जाइछ ?
2. छन्दक मुख्यत: कतेक भेद होइत अछि ?
3. वार्णिक एवं मात्रिक छन्दमे की अन्तर अछि ?
4. छन्दक सन्दर्भमे पाद ककरा कहल जाइछ ?
5. निम्नलिखित वार्णिक छन्दकेँ सोदाहरण स्पष्ट करू :
   वसन्ततिलका, तोटक, मालिनी, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता एवं शार्दूलविक्रीडित ।
6. निम्नलिखित मात्रिक छन्दक सोदाहरण परिभाषा लिखू :
   चौपाइ, दोहा, सोरठा, कुण्डलिया तथा हरिगीतिका ।